अध्ययन सामग्री
एम॰ ए॰ सेमेस्टर 2
CC IX UNIT 1
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
वी॰ कु॰ सिं॰ वि॰, आरा

30.07.20

उत्तररामचरितम्

भवभूति की नाट्यकला

भवभूति के नाटकों की नाट्यकला से समीक्षा करने पर वे उन्नत कोटि के ठहरते हैं। नाट्यकला के अन्तर्गत नाटक के सभी तत्त्व आ जाते हैं, यथा – कथानक, पात्र, अन्वितियाँ, कथोपकथन आदि। जहाँ तक कथानक का प्रश्न है भवभूति का क्षेत्र सीमित है — दो नाटकों की कथावस्तु श्रीरामचन्द्र के आख्यान से सम्बद्ध है और मालतीमाधव की प्रणयकथा लोकवृत्त पर आधारित है। दो रामचरित पर आधृत नाटकों की कथावस्तु के विन्यास में भवभूति को प्रचलित परम्परा का पालन आवश्यक था। परम्परा के पालन के साथ-साथ भवभूति ने उचित मौलिकता का भी सन्निवेश किया है। उत्तररामचरित के अन्त में सीता राम का मिलन भी नवीनोद्भावना ही है। इसका उद्देश्य नाटक को सुखान्त बनाना है।

भवभूति के नाटकों के पात्र भी बड़ी कुशलता से निर्मित है। पात्रों के प्रकार भी बहुत से हैं। अत्यन्त क्रोधी, अत्यन्त शान्त, कापालिक, बौद्ध, भिक्षुणी, इत्यादि बहुत प्रकार के पात्र इन नाटकों में हैं। नाटक की मुख्य शक्ति उसके पात्रों पर निहित रहती है। पात्रों के चरित्राङ्कन में भवभूति ने पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। उत्तररामचरित के मुख्य पात्र राम, सीता, वासन्ती, जनक, तमसा, कौशल्या, लव-कुश।

चन्द्रकेतु आदि हैं। इस नाटक के प्रणयन के समय नाटककार की प्रौढ़ि चरमावस्था तक पहुँच गयी थी। इस नाटक के सभी पात्र चाहे उस नाटक में उनका महत्त्व कितना भी छोटा क्यों न हो अपने रूप में पूर्ण हैं। श्री राम - महान् कर्मनिष्ठ, लोकरञ्जक तथा कर्त्तव्यपरायण होने के साथ ही आदर्श प्रणयी भी हैं। एक ओर लोकाराधन के लिए सीता का त्याग करने से भी वे विरत नहीं होते तो दूसरी ओर आदर्श धर्मपत्नी का त्याग कर वे पुटपाक की भाँति भीतर ही भीतर जलने भी लगते हैं। भवभूति के पात्र गम्भीरता की प्रतिमूर्ति हैं। उनके पात्रों में किसी प्रकार की उच्छृंखलता नहीं। भवभूति के नाटकों में विदूषकों का सर्वथा अभाव है।

भवभूति के सभी नाटकों के पात्र सामान्यतः एक ही धरातल पर हैं। कोई करुणा में डूबा है तो कोई वीर में तो कोई विलाप ही कर रहा है। यद्यपि उनके पात्रों में बहुत ही मौलिकता है, बहुत ही भावुकता है पर मृच्छकटिक जैसे जीवट के पात्रों का अभाव खलता है।

भवभूति के संवादों का भी अपना विशेष महत्त्व है। भवभूति के पात्र प्रायेण भावुक होते हैं। अतः अपने भावों को वे खुलकर व्यक्त करते हैं।

भवभूति भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् हैं, वश्यवाक् कवि हैं। जैसे भाव का चित्रण करना है, भाषा उसी के अनुरूप होती है। भाषा की सरलता के विषय में उनका कोई आग्रह नहीं। क्लिष्ट, श्लिष्ट तथा समस्त भाषा का प्रयोग भवभूति में बहुलता से मिलता है। यद्यपि भवभूति सरलता के पक्षपाती नहीं पर उनकी भाषा ऐसी कहीं भी नहीं होने पायी है जो विषय और भाव के विपरीत हो, अपितु वह सदैव विषय और भाव की व्यञ्जना में समर्थ है।

भवभूति के नाटक रस-निष्पत्ति की दृष्टि से बेजोड़ हैं। भवभूति रस के आचार्य हैं। यद्यपि उनके नाटकों में सभी रसों का वर्णन है पर करुण, शृंगार, वीभत्स और रौद्र की वर्णना में महाकवि ने सारी शक्ति केन्द्रित कर दी है। इन रसों का वर्णन और

भावों की गम्भीरता भवभूति के नाटकों में अप्रतिम है।

नाटक में अन्वितियों का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है — समय, स्थान तथा कथानक की अन्वितियाँ। नाटक की घटना का समय उतने ही समय से सम्बद्ध होना चाहिए जितने समय में नाटक प्रदर्शित किया जा सके या अधिक-से-अधिक एक दिन का समय हो। दूसरी अन्विति स्थान की। घटना का सम्बन्ध उतने ही स्थान से होना चाहिए जितना उस सीमित समय के अन्तर्गत सम्भव हो। कथानक के विस्तार तथा विन्यास में गति होनी चाहिए। यों तो संस्कृत के प्रायेण किसी भी नाटक में इन अन्वितियों पर ध्यान नहीं दिया गया है। काल की दृष्टि से उत्तररामचरित बारह वर्षों के दीर्घ समय से सम्बद्ध है, महावीरचरित का कथानक राम के सम्पूर्ण पूर्व चरित्र (विवाह, वनवास, रावणवध, राज्याभिषेक) से सम्बद्ध है। स्थान की अन्विति पर भवभूति के किसी भी नाटक में ध्यान नहीं दिया गया है। उत्तररामचरित का कथानक अयोध्या के राजप्रासाद, दण्डकारण्य और वाल्मीकि के आश्रम तक फैला है। उदाहरणार्थ - उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क के विषय। काव्य और रसपरिपाक दृष्ट्या यह अङ्क बड़ा ही महत्त्वपूर्ण तथा प्रभावशाली है पर नाटकीय गति में कोई सहायता नहीं मिलती, इसके विपरीत नाटक के कथानक में मन्थरता आ जाती है। कथानक वहीं का वहीं पड़ा रहता है और दर्शक रोने गाने लगता है। आगे जाने पर जब मुख्य कथासूत्र से सम्बन्ध होता है तो उसकी रसमग्न चित्तवृत्ति को झटका लगता है। इस प्रकार अन्वितित्रय का भवभूति के नाटकों में पालन नहीं हुआ है।

भवभूति ने नाटकों में प्रकृति के दृश्यों का भी चित्रण किया है। पर यह नाटक को सजाने की दृष्टि से नहीं, अपितु ये प्राकृतिक दृश्य प्रकृत रस को उद्बुद्ध करने में सहायक हैं। भवभूति को प्रकृति की सुकुमारता से प्रेम नहीं। कवि घोर-गंभीर विषय और भयावह प्राकृतिक दृश्यों को उपस्थित करने में विशेष कुशलता दिखाता है।

नाटक के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात है उसकी अभिनेयता नाटक की सबसे बड़ी सफलता उसका अभिनेय होना है। यह श्रव्य नहीं अपितु दृश्यकाव्य है। भवभूति के सभी नाटकों का उनके जीवन-काल में ही अभिनय हो चुका था। उनके नाटकों का प्रथम प्रदर्शन कालप्रियानाथ के मन्दिर में हुआ था। सम्प्रति यह कहा जा सकता है त्रुटियों के होने पर भी संस्कृत सामाजिकों के सम्मुख भवभूति के नाटकों का अभिनय बड़ी सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भवभूति में एक सच्चे नाटककार की सम्पूर्ण विशेषताएँ मिलती हैं। जैसे - उर्वरा कल्पना शक्ति, उदात्त और सुन्दर वस्तु एवं भावनाओं का मूल्यांकन सफल चरित्र-चित्रण की अद्भुत क्षमता, पात्रों के मन में विभिन्न परिस्थितियों एवं रूपों में होने वाली प्रतिक्रिया का ज्ञान और अद्भुत अनुकूल वर्णन शक्ति, काव्य की गति, लय एवं संगीतात्मक अभिव्यक्ति अपने आकर्षण में अपूर्व है।